युगाचार्य्य स्वामी प्रणवानन्द

अंग्ररेजी सन् 1923 के माघी पूर्णिमा के पुण्य त्यौहार के अंत बाजितपुर गांव के जानेमाने लोग एक गुट त्यागव्रतजी र्सन्ययसी के साथ एक सभा में मिले थे। उस सभा में युगाचार्य स्वामी प्रणवपनन्दजी स्वयं जिनका उस समय का नाम रहा ब्रह्मचारी विनोद उपस्थित थे। आलोचना के पष्चात सबके इच्छा के अनुसार प्रकल्पित सेवा संस्था का नाम रखा गया भारत सेवाश्रम संघ सभा को संबाधितकर स्वामी जी ने कहा मेरा संघ बनेगा दूसरा बुद्व का संघ। सारे देष को मै बुद्व षंकर चैतन्य जैसे नया आदर्ष तथा तप षक्ति से संजीबित करना चाहता हुं इस जनकल्याण संस्था का प्राणपुरूष स्वामीजी बुधवार 29 जनवरी 1896 माघी पूर्णिमा की तिथी में फरिदपुर जिले के (अब बांग्लादेष में) बाजितपुर गांव में जन्में। पिता का ना बिष्णुचरण माता षारदा देवी । बुधवार जनम होने के कारण षैषव मे उनको बुधाई नाम से पुकारा जाता था उनके जनम लगन से ही परिवार मे षांति वापस आई साथ ही समस्याओं पर विजयप्राप्त होने की षुरूवात हुई। इसी कारण स उनका एक नाम जयनाथ। अन्नप्राषन का षुभ अवसर पर उनको नाम दिया गया विनोद। किषोर अवस्था से ही वे साधु नाम से जाने जाते थे। आज बाजितपुर प्रणवमठ के पास सरकारी सडक पर जेा पुल है उसे साधु का पुल कहा जाता है। पाकिस्तानी जमाने में बने उस पुल का नामकरण आम जनता की श्रद्वा का ही परिचय देता। वाल्यकाल से ही स्वामी जी कुछ अलग स्वभाव के रहे। वे थे धीर–स्थिर स्वल्पभाषी स्वल्पनिद्र स्वल्पहारी आत्मस्थ अनासक्त तथा निर्लिप्त स्वभाव के उनके षरीर आचरण चिंता सभी स्वभावयोगी के सारे लक्षण देखा जाता था वे थे कठोर संयमी तथा ब्रहमचर्य निष्ठ ।

अगेंजी सन् 1913 स्वामीजी ने योगी राज गंभीरनाथजी से दीक्षा लिया। सन 1913 की माघी पूर्णिमा तिथि पर ही उनको योगसिद्वी मिली। उनका तपःपुत देवषरीर पर पूर्ण भागवतीषक्ति का आविभार्व हुया। संमाधिभंग के पष्चात ही उनके श्री कंठ से उदात्र घोषणा हुयी यह युग है महाजागरण का यह युग है महामिलन का महासमन्वय का तथा महामुक्ति का।

अंग्ररेजी सन 1924 से प्रयाग का अर्थ कुम्भमेला में स्वामी गोविंदान्द गिरी से सन्यास ग्रहण कर वे स्वामी प्रणवानन्द नाम से पारिचित हुए। जाति–धर्म–वर्ण निर्विषेष सब मानव में महाजागरण, महामिलन, महासमन्वय तथा महामुक्ति लाना ही उनके जीवन का लक्ष्य रहा।

तब शुरू हुआ लोकमंगल का महायज्ञ। भारत सेवाश्रम संघ स्थापित हुआ, और स्वामीजी उसका संघनेता के रूप परिचित हुए। संघ का मुल उद्देष्य रहा धर्म तथा आध्यात्मिकता के आधार पर व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र को डालना। उस उद्देष्य से धर्मप्रचार, तीर्थसंस्कार, जनसेवा, अनुन्नत की उन्नति, उपजाति की कल्याण, समाज संस्कार तथा समाज को संगठित करना इद्यादि विविध कार्यक्रम चालु किए गए। संघ तथा संघनेता के लक्ष्य के धारक के रूप एक दल संसारविरागी सैनक–जिनके लक्ष्य रहा आत्ममुक्ति तथा विष्वकल्याण – प्रस्तुत किए गए। उनके परिचय रहा संघ संतान। संघ संतानों को साधन–जीवन तथा कर्म–जीवन संगठित करने को जो उपदेष स्वामीजी देते थे वि श्रीश्री संघगीता नाम से प्रकाषित हुआ था। वालक, युवक, छात्रसमाज और मानवजाति के जीवनदर्षन तथा जीवनचर्या पर जो उपदेष स्वामीजी के श्रीकंठ से उच्चारित हुए 1921 से वह हैडंबिल के रूप जनसमाज में प्रचारित होते थे। समय समय पर स्वामीजी स्वयं लोगों को वितरित करते। उन वाणीओं का नाम रखा गया संघवाणी और बह्मचर्यम। उन होनें आज भी लोकप्रिय है। पर बदले हुए रूचि से तालमेल रखने की खातिर इस नया संस्करण बना है।

सन् 1949 के 8 जनवरी (बांगला 24 पौष 1347) बुधवार रात 12.48 मिनट में स्वामीजी कलकत्ते में महापरिनिर्वाण प्राप्त किए।

यह क्या है?

साधुओं के आध्यात्मिक भ्रातृत्व और मानवीय कर्मों के प्रति उद्धद्ध निःस्वार्थ कर्मियों की संस्था है। सन् 1916 में आध्यात्मिक प्रकाष के परिवर्तन काल में प्राप्त दिव्य प्रेरणा के फलस्वरूप महान् देषभक्त ऋषि युगाचार्य श्रीमत् स्वामी प्रणवानन्दजी ने भारत सेवाश्रम संघ की स्थापना की थी।

उद्देष्यः–

1. सन्यासी संगठन।
2. नैतिक व आध्यात्मिक पुनरूत्थान।
3. जाति, धर्म और वर्ण के भेदभाव बिना मानव सेवा।
4. आदर्ष षिक्षा का प्रसार।
5. तीर्थस्थानों का सुधार।
6. हिन्दू समाज का पुनर्निर्माण।
7. दैहिक षिक्षा का विस्तार।
8. प्राकृतिक दुर्योग पीड़ितों की सेवा।
9. चिकित्सा सहायता व कुष्ठ कल्याण योजना।
10. नैतिक व आध्यात्मिक प्रकाषनों का विस्तार।
11. वैदेषिक सांस्कृतिक अभियान।
12. आदिम जाति का कल्याण व पिछड़े वर्गों के उत्थान की योजनाएँ।

स्वामी जी की परिकल्पना हिन्दु मिलन मन्दिर

गाँवों व शहरों में एक सा मिलन क्षेत्र निर्माण करना होगा जहाँ पर उन्नत–अनुन्नत, षिक्षित–अषिक्षित, धनी व निर्धन सब प्रकार के हिन्दु बड़े प्रेम भाव से सम्मिलित व संघबद्ध होकर हिन्दु समाज के सर्बागीण कल्याण साधन में आत्मनियोग कर सकेंगे। आज एक ऐसा मिलन क्षेत्र बनाना पड़ेगा जहाँ पर हिन्दु मात्र ही भेदाभेद, द्वद्व–संघर्ष, छुआछूत के भाव को हटा कर अपने मान, इज्जत, स्वार्थ व अधिकार की रक्षा के लिये दृढ़ संकल्प होगा इस उद्देष्य से ही हिन्दु–मिलन मन्दिर के आन्दोलन का प्रवर्तन किया गया है।